अभ्यास पत्रक

पाठ: 2 - दो गौरैया

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

---

1. निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर चुनें। (5 अंक)

(i) दरवाजों के नीचे कपड़े ठूँसने के बाद गौरैयाँ कहाँ से अंदर आ गईं?

(क) खिड़की से (ख) छत से (ग) टूटे हुए रोशनदान से (घ) रसोई के रास्ते से

(ii) जब पिताजी ने गौरैयों का घोंसला तोड़ने का फैसला किया, तो वे कहाँ बैठी थीं?

(क) पंखे पर (ख) पर्दे के डंडे पर (ग) बाहर आँगन की दीवार पर (घ) रसोई के दरवाजे पर

(iii) पिताजी के हाथ घोंसला तोड़ते हुए क्यों ठिठक गए?

(क) माँ के रोकने के कारण (ख) लाठी टूटने के कारण

(ग) घोंसले से नन्हीं गौरैयों की 'चीं-चीं' की आवाज सुनकर (घ) थक जाने के कारण

(iv) कहानी के अंत में पिताजी का व्यवहार गौरैयों के प्रति कैसा हो गया?

(क) वे और अधिक गुस्सा हो गए। (ख) वे उन्हें देखकर मुस्कुराने लगे।

(ग) वे उदास हो गए। (घ) उन्होंने गौरैयों पर ध्यान देना बंद कर दिया।

(v) लेखक भीष्म साहनी को उनके किस उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था?

(क) गुलेल का खेल (ख) दो गौरैया (ग) तमस (घ) मल्हार

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें। (5 अंक)

(i) पिताजी ने रोशनदान को बंद करने के लिए उसमें क्या ठूँस दिया?

उत्तर- .....

(ii) पिताजी ने गुस्से में कहा, "किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका ..... तोड़ देना चाहिए।"

उत्तर- .....

(iii) घोंसला तोड़ते समय गौरैयों की हालत कैसी हो गई थी?

उत्तर- .....

(iv) घोंसले से झाँकती नन्हीं गौरैयाँ क्या कर रही थीं?

उत्तर- .....

(v) नन्हीं गौरैयों को देखकर माँ ने तुरंत क्या किया?

उत्तर- .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें। (3 x 2 = 6 अंक)

(i) पिताजी का गौरैयों के प्रति गुस्सा क्यों बढ़ता जा रहा था?

उत्तर- .....

.....

(ii) "अबकी बार वे रोशनदान में से आ गई थीं जिसका एक शीशा टूटा हुआ था।" इस घटना से गौरैयों के स्वभाव के बारे में क्या पता चलता है?

उत्तर- .....

.....

(iii) कहानी का अंत सुखद है। स्पष्ट कीजिए कैसे।

उत्तर- .....

.....

4. निम्नलिखित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न का उत्तर विस्तार से दें। (4 अंक)

(i) कहानी का शीर्षक 'दो गौरैया' है, लेकिन कहानी का अंत दो नन्हीं गौरैयों के बच्चों से होता है। आपके विचार में, कहानी में इन बच्चों की क्या भूमिका थी और उनके आने से कहानी में क्या बदलाव आया?

उत्तर- .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

उत्तर कुंजी (वर्कशीट - 2)

1. बहुविकल्पीय प्रश्न: (i) (ग) टूटे हुए रोशनदान से

(ii) (ग) बाहर आँगन की दीवार पर

(iii) (ग) घोंसले से नन्हीं गौरैयों की 'चीं-चीं' की आवाज सुनकर

(iv) (ख) वे उन्हें देखकर मुस्कुराने लगे।

(v) (ग) तमस

2. एक वाक्य में उत्तर: (i) पिताजी ने रोशनदान को बंद करने के लिए उसमें कपड़ा ठूँस दिया।

(ii) पिताजी ने गुस्से में कहा, "किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका **घर** तोड़ देना चाहिए।"

(iii) घोंसला तोड़ते समय गौरैयाँ दुबला गई थीं, काली पड़ गई थीं और चुपचाप गुमसुम बैठी थीं।

(iv) घोंसले से झाँकती नन्हीं गौरैयाँ नीचे की ओर देख रही थीं और 'चीं-चीं' किए जा रही थीं।

(v) नन्हीं गौरैयों को देखकर माँ ने तुरंत घर के सभी दरवाजे खोल दिए।

3. संक्षिप्त उत्तर: (i) पिताजी का गुस्सा इसलिए बढ़ता जा रहा था क्योंकि उनके बार-बार भगाने के बावजूद गौरैयाँ किसी न किसी रास्ते से वापस घर में घुस आती थीं। साथ ही, माँ उनकी मदद करने के बजाय उन पर हँस रही थीं, जिससे उनका गुस्सा और बढ़ रहा था।

(ii) इस घटना से गौरैयों के दृढ़ स्वभाव और अपने घर को न छोड़ने की जिद का पता चलता है। वे हार मानने वाली नहीं थीं और अपने बनाए हुए घर में रहने के लिए हर संभव रास्ता खोज रही थीं, जो उनकी अपने बच्चों के प्रति जिम्मेदारी को भी दिखाता है।

(iii) कहानी का अंत सुखद है क्योंकि घोंसले में नन्हीं गौरैयों को देखकर पिताजी का हृदय पिघल जाता है। उनका गुस्सा खत्म हो जाता है और वे उन्हें स्वीकार कर लेते हैं। पूरा परिवार एक साथ उन नन्हीं गौरैयों और उनके माता-पिता को देखकर मुस्कुराता है, जिससे घर का तनावपूर्ण माहौल खुशी में बदल जाता है।

4. दीर्घ उत्तरीय उत्तर: (i) कहानी में नन्हीं गौरैयों (बच्चों) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे कहानी के मुख्य पात्र नहीं हैं, लेकिन कहानी का निर्णायक मोड़ (turning point) उन्हीं के कारण आता है। उनकी भूमिका और उनसे आए बदलाव इस प्रकार हैं:

- **पिताजी का हृदय परिवर्तन:** कहानी में पिताजी का एकमात्र लक्ष्य गौरैयों को घर से निकालना था, जिसके लिए वे कठोर से कठोर कदम (घोंसला तोड़ना) उठाने को तैयार थे। लेकिन जैसे ही घोंसले से नन्हीं गौरैयों की 'चीं-चीं' की आवाज आती है, वे ठिठक जाते हैं। उन नन्हे, असहाय बच्चों को देखकर उनकी सारी कठोरता और गुस्सा करुणा में बदल जाता है।
- **कहानी के संघर्ष का अंत:** नन्हीं गौरैयों का दिखना ही कहानी के मुख्य संघर्ष (पिताजी बनाम गौरैयाँ) का अंत कर देता है। पिताजी तुरंत अपना प्रयास छोड़ देते हैं और चुपचाप बैठ जाते हैं।
- **परिवार का एक होना:** इन बच्चों के आने से पहले माँ और पिताजी के बीच एक तरह का तनाव था, जहाँ माँ पिताजी पर हँस रही थीं। लेकिन बच्चों को देखने के बाद, पूरा परिवार (माँ, पिताजी और लेखक) एक साथ मिलकर उस दृश्य को देखता है और पिताजी भी मुस्कुराने लगते हैं। इस प्रकार, नन्हीं गौरैयों का आगमन कहानी में एक उत्प्रेरक (catalyst) का काम करता है, जो क्रोध को करुणा में, संघर्ष को शांति में और तनाव को आनंद में बदल देता है।